विचार बिन्दु

ख्याति की अभिलाषा वह पोषक है जिसे ज्ञानी भी सबसे अंत में उतारते हैं। –कहावत

मुश्किल समय में शिक्षकों के समक्ष चुनौती

शिक्षकों के लिए वर्तमान समय से अधिक चुनौतीपूर्ण समय कभी नहीं रहा। यह वह समय है जब शिक्षकों से न केवल अपने छात्रों की पढ़ाई-लिखाई, बल्कि अपने छात्रों की सामाजिक और भावनात्मक जरूरतों की देखभाल करने की भी अपेक्षा की जाती है। कोविड महामारी ने सभी को प्रभावित और चिंतित किया है। इसके प्रभाव से शिक्षक भी अछूते नहीं रहे। ऐसे अशांत समय में अब शिक्षकों पर यह दायित्व आन पड़ा है कि स्कूलों से दूर रहने से विद्यार्थियों की पढ़ाई में जो कमी रह गई उसे कैसे पूरा किया जाय। यहां उन सक्षम परिवारों की बात नहीं है जिनके बच्चे ऑनलाइन या अन्य विधियों से अपनी पढ़ाई काफी हद तक जारी रख पाये बल्कि उन बहुसंख्यक परिवारों के बारे में है जिनके बच्चे स्कूली पढ़ाई से बिल्कुल कटे रहे। अनेक अध्ययन बताते हैं कि ऐसा गावों में रहने वाले बच्चों तथा लड़कियों के साथ ही नहीं हुआ बल्कि शहरों में भी गरीबों के साथ हुआ। उनकी पढ़ाई की भरपाई करने के लिए क्या हमारे शिक्षकों में जज्बा है? क्या वे अपने छात्रों के लिए पर्याप्त कर पा रहे हैं? यहां यह सवाल सबसे पहले उठ खड़ा होता है कि नये सत्रों में पीछे रह गये विद्यार्थियों की वास्तव में आवश्यकता क्या है और वह कौन सी विधि है जिससे विद्यार्थियों के खोए हुए समय की पढ़ाई की पूर्ति हो सके। सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा के क्षेत्र में हुए अनेक शोधों ने बताया है कि जब छात्रों को महसूसस होता है कि उनका शिक्षक उनका मददगार है तो उनका उसके साथ घनिष्ट संबंध बनता और वे स्कूल में आनंद और सफलता का अनुभव करते हैं। नई परिस्थितियों में शिक्षक और छात्र के बीच ऐसे संबंधों की सबसे अधिक जरूरत है। ऐसा प्राइमरी कक्षाओं के छात्रों के लिए ही सच नहीं है बल्कि, मिडिल और हाई स्कूल के छात्रों के साथ भी ऐसा ही है। ऐसा सभी मानते हैं कि जब छात्र ठीक से देखभाल करने वाले और मददगार शिक्षकों के संपर्क में होते हैं तो वे अधिक सकारात्मक परिणाम दिखाते हैं।

अब यह सवाल स्वाभाविक ही उठता है कि विद्यार्थियों की देखभाल करने वाला तथा मददगार शिक्षक होने का क्या अर्थ है? इस प्रश्न का उत्तर खोजने के लिये दुनिया भर में अनेक अध्ययन और विमर्श हुए हैं। फिर भी इस बारे में कम ही जानकारी रही है कि छात्रों की परवाह और देखभाल करने वाले शिक्षक होने का वास्तव में क्या अर्थ है? सबसे बढ़ कर यह भी कि इस बारे में छात्र स्वयं क्या सोचते हैं? हाल ही में 'जर्नल ऑफ ऐडोलेसन्ट रिसर्च' में छपे एक पेपर के अध्ययनकर्ता सीधे विद्यार्थियों के पास यह पूछने के लिए गए कि उनकी राय में एक परवाह करने वाला, देखभाल करने वाला शिक्षक कैसे होते हैं? विद्यार्थियों ने उन्हें बताया कि सबसे प्रामाणिक, पूरे मन से काम करने वाले वाले शिक्षक शांत, स्पष्ट और सहृदयहोते हैं।

शांत रहना एक शिक्षक की ऐसी क्षमता को दर्शाता है जो शिक्षण में निहित चुनौतियों का सामना करने के लिए सचेष्ट रहने और अपने स्वयं के तनाव को नियंत्रित करने की क्षमता रखता है। ऐसे शिक्षक स्वयं की भावनाओं पर नियंत्रण रखते हैं। यदि शिक्षक खुद शांतधैर्यवान होंगे तो उनकी कक्षा में छात्रों के बीच भी शांत वातावरण बना रहेगा। एक अच्छा शिक्षक प्रेममय होता है जो छात्रों पर चिल्लाता नहीं उसका व्यवहार शांतहोता है। छात्रों को क्या करना है उसे बताने की उसे हड़बड़ी नहीं होती और वह कक्षा में सीखने का एक शांत वातावरण बनाता है। किसी विद्यार्थी को जब कोई चीज नहीं आती तब वह उस पर झल्लाता नहीं बल्कि उसे प्रेम से उसे उसकी बेचैनी से बाहर लाता है और प्रेरित करता है। मन से स्पष्ट शिक्षक में यह क्षमता होती है कि वह एक तरफ तो अपने छात्रों के साथ उपस्थित रहता है और दूसरी तरफ वह छात्रों की जरूरतों के अनुरूप खुद भी जिज्ञासु बना रहता है। ऐसा शिक्षक अपने छात्रों के साथ स्पष्ट, लोकतांत्रिक संवाद करता है, उन्हें सुनता है। कक्षा में शिक्षक का स्पष्ट होना बहुत जरूरी है। उसकी स्पष्टता उसके अपने विषय के ज्ञान पर भी निर्भर करती है। जिस विषय को शिक्षक पढ़ाता है उसके बारे में यदि उसे ही कहीं कठिनाई है तो वह उसके छात्रों के साथ व्यवहार में जरूर झलकेगी। सहृदय होना किसी भी शिक्षक के व्यक्तित्व का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। ऐसा शिक्षक कक्ष में कोई अंतिम फैसला नहीं सुनाता। उसका विद्यार्थियों से व्यवहार गर्मजोशी का होता है और वह उनसे ऐसे संबंध बनाता है जिनमें एक दूसरे के प्रति विश्वास और सम्मान होता है और वह छात्रों की जरूरतों के समय उनके साथ मौजूद होता है।शिक्षक में करूणा और सहानुभूति का भाव उसके कौशल का महत्वपूर्ण अंग होता है। वह छात्रों की भावनाओं को समझता है और जब भी वह किसी छात्र को परेशान पाता है तो उसे धैर्य बंधाने हमेशा तत्पर रहता हैं।

शिक्षा मनोविज्ञानी कहते हैं कि शिक्षकों का छात्रों के प्रति शांत, स्पष्ट और सहृदय होना खुद उनकी अपनी भलाई का भी सबब बनता है। कक्षा में ये सावधानियां शिक्षकों के लिए खुद उनके निजी जीवन में भी लाभदायक बनती हैं। सहृदयता और लचीलापन शिक्षकों को जीवन में सफलता की कुंजी भी देते हैं।

लेकिन हम जानते हैं कि किसी के लिए हर पल शांत, स्पष्ट और सहृदय होना हमेशा आसान नहीं होता है। खासकर तब जब कोई खुद तनाव में हो या व्यस्तता में हों। इसलिए शिक्षा मनोविज्ञानी कहते हैं कि शिक्षकों का छात्रों के प्रति शांत, स्पष्ट और सहृदय होना खुद उनकी अपनी भलाई का भी सबब बनता है। कक्षा में ये सावधानियां शिक्षकों के लिए खुद उनके निजी जीवन में भी लाभदायक बनती हैं। सहृदयता और लचीलापन शिक्षकों को जीवन में सफलता की कुंजी भी देते हैं। आत्म-जागरूकता और किसी फैसले पर कूद कर न पहुंचना ऐसे कौशल हैं जो किसी को अच्छा शिक्षक ही नहीं बनाते बल्कि एक अच्छा इन्सान भी बनाते हैं। कोई शिक्षक जब किसी भी छात्र के बारे में अंतिम फैसला न लेने का व्यवहार साध लेता है तब वह अपने खुद के जीवन में भी अनोखी शांति अनुभव करता है। तनाव मुक्त रहना शिक्षक को अपने को स्वस्थ रखने का मंत्र बन जाता है। एक अध्ययन में सामने आया है कि अमरीका और कनाडा में वे स्कूली शिक्षक जिन्होंने माइंडफुलनेस प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया, उन्होंने कक्षा और घर दोनों जगह मूड, अच्छी नींद और संतुष्टि में सुधार का अनुभव किया।इन तीन कौशल वाले शिक्षकों में काम का तनाव, ईर्ष्या, अवसाद और चिंता तो कम होते ही हैं वे अपने छात्रों के साथ अधिक भावनात्मक स्तर पर संवाद भी आसानी से कर सकते हैं। कहा जा सकता है कि छात्र अपने शिक्षकों से जो अपेक्षा रखते हैं वह वास्तव में शिक्षकों की खुद अपनी जरूरत भी होती है। अच्छा शिक्षक छात्रों को सवाल पूछने के लिये प्रोत्साहित करता है तो छात्रों के सवालों से शिक्षक भी बहुत कुछ सीखता है।शिक्षक की असली शक्ति इसमें है कि वह अपने छात्रों को कितना समझ पाता है। छात्रों को शिक्षण की जटिल रणनीति अथवा शिक्षक के अकादमिक कौशल से मतलब नहीं होता। वे अपनी साधारण भाषा में शिक्षक से ज्ञान चाहते हैं। वे कक्षा प्रेम और उमंग का माहौल रचने वाले ऐसे शिक्षक को पसंद करते हैं जो उन्हें समझता हो, उनकी आवश्यकताओं को समझता हो। ऐसा बनने के लिए शिक्षक को पहले खुद अपने पर ध्यान देना होगा। तभी वह अपने काम में अधिक सचेत होगा और छात्रों के साथ मित्रवत होगा। शिक्षक का अपने आप को पहचानना और बदलना शिक्षण प्रशिक्षण का अभिन्न हिस्सा ही नहीं होना चाहिए बल्कि उनकी सतत शिक्षा का भी महत्वपूर्ण हिस्सा होना चाहिए। तभी पढ़ाई की एक नई संस्कृति हम रच पाएंगे। ऐसी संस्कृति पुरातन भारत में गुरुकुलों के रूप में थी जहां गुरु और शिष्य का मीठा बंधन था जिसमें शिक्षण के वे सभी तत्व थी जिन्हें आज के समय में अकादमिक तरीकों से नवाचार के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है। हमारे शिक्षक ऐसा कर पायें तो कोविड महामारी के दौरान पढ़ाई में पीछे छूट गये छात्रों की जरूर मदद हो सकेगी। लेकिन क्या हमारी स्कूलों के शिक्षकों में ऐसा बनने की आकांक्षा है, यह बड़ा सवाल है।

यह भी सच है कि शिक्षकों के चयन के दौरान उनकी विशेषज्ञता के जिस पक्ष पर बहुत कम ध्यान दिया जाता है वह यह है कि क्या उनमें मन लगाकर पढ़ाने और अपनी पूर्णता के साथ कक्षा में उपस्थित होने का उनमें कौशल है? क्या वह 'शरीर में शांत, मन में स्पष्ट, और सहृदय' हैं? शांत, स्पष्ट और सहृदय होना जिन शिक्षकों की फितरत में होता है वे सहज शिक्षक होते हैं। परंतु शिक्षण के पेशे में आने वाले सभी के बारे में तो ऐसा नहीं कहा जा सकता। शिक्षण एक रोजगार बन गया है और अनेकों के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं को पास करके एक नौकरी पा जाना ही शिक्षक हो जाना हो गया है। ऐसे अभ्यर्थी भी लिखित परीक्षा पास करके चयनित हो जाते हैं जिनमें तुनकमिजाजी, उतावलापन और झट से क्रोध आ जाना उनके व्यक्तिवा का हिस्सा होता है जो उनके पालन पोषण और जीवन के शुरुआती वर्षों के जिस माहौल में उनका विकास हुआ उसके कारण होता है। यदि वे अपनी इन समस्याओं को समझ पायें और अपना एक अच्छे शिक्षक में रूपांतरण कर पायें तो वह न केवल उनके विद्यार्थियों के लिए ही लाभदायक सिद्ध होगा बल्कि खुद उनके विकास में मददगार होगा। शिक्षकों का यह कौशल न केवल छात्रों की मदद कर सकता हैं, बल्कि इस कठिन समय में खुद उनकी सलामती और बेहतरी में भी महत्वपूर्ण साबित हो सकता है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ संपादक एवं विश्लेषक)

भारत के अधिकांश विश्वविद्यालय क्या अब विश्वविद्यालय कहलाने लायक हैं?

उच्चतम शिक्षा के केंद्र भारत में विश्वविद्यालय कहे जाते हैं जो अंग्रेजी के शब्द यूनिवर्सिटी का हिंदी पर्याय है। शाब्दिक अर्थों में विश्वविद्यालय का स्वरूप विश्व स्तर का होना आवश्यक है अर्थात अंग्रेजी में यूनिवर्सल नेचर। क्या हमारे विश्वविद्यालय यूनिवर्सल नेचर के हैं ? उच्चतम कक्षाओं में निरीह छात्रों को किन्ही अवस्थाओं में लाचारी दिखाई देती है।

शिक्षा में तत्वज्ञान अथवा दार्शनिक ज्ञान की कमी से विद्यार्थियों में जिज्ञासा नहीं पनपती और वे अधकचरा ज्ञान लेकर चले जाते हैं फलस्वरूप वे समाज में कोई सार्थक उपयोगी कार्य करने में असक्षम ही रहते हैं। सर्वप्रथम उन्हें यही पता नहीं होता कि वे अमुक शिक्षा संस्थान में क्यों आये हैं और वहां अमुक विषय पढ़ने का क्या उद्देश्य है? ऐसी उद्देश्यहीन शिक्षा लेने से क्या तात्पर्य, और भविष्य में उससे क्या हासिल होगा ? छात्र को पता नहीं। छात्रों के प्रवेश और वांछित विषय पढ़ने में अनेक कठिनाइयां हैं किसी विषय में प्रवेश के लिए सीटों की निर्धारित संख्या होती है जिसमें लगभग आधी अनेक प्रकार के रिजर्वेशन या आरक्षण से भर ली जाती हैं शेष पर सामान्य छात्र प्रवेश मेरिट के आधार पर पाते हैं फिर भी अनेक पढ़ाई के इच्छुक छत्र प्रवेश से वंचित रह जाते हैं उनमे से धनी व संपन्न दूसरे देशों की रह लेते हैं।

पुस्तकालय और प्रयोगशालाएं स्नातक व् अधिस्नातक व् शोध छात्रों के लिए आवश्यक सुविधाओं में गिने जाते हैं प्रोफेशनल और तकनीकी विषयों में अनेक आयाम ऐसे होते हैं जिनमें प्रयोगात्मक परीक्षण और विश्लेषण करने होते हैं। पुस्तकालय में अनेक पुस्तकें व प्रकाशन मंगवाए जाते हैं ताकि छात्र व अध्यापक उन्हें समय-समय पर देखते रहें और पढ़कर अपने को अपडेट करते रहें। पुस्तकालय में जाकर पढ़ने का रिवाज़ अब समाप्त प्राय: है, पूर्व में अधिस्नातक व् शोध छात्रों को पुस्तकालय में केबिन अलॉट हुआ करती थी। हाल में प्रकाशित पुस्तकें और जर्नल्स एक रिवोल्विंग रैक पर एक माह तक रखी जाती थी ताकि सभी उनसे अवगत हो जायें, अब ऐसा कुछ नहीं है। पहले टीचर छात्रों को किसी टॉपिक पर असाइनमेंट देते थे जिसे पूरा करने के लिए लाइब्रेरी का उपयोग जरूरी होता था। अब यदा-कदा कतिपय टीचर ही छात्रों को स्वयं लिखने के लिए कोई कार्य देते हैं।

लैबोरेट्रीज का जहां तक प्रश्न है सरकारी महाविद्यालयों में प्रयोगशालाएं भी हैं और वे वांछित उपकरणों से सुसज्जित भी हैं लेकिन विद्यमान उपकरणों का उपयोग नहीं के बराबर है क्योंकि पूर्णकालिक टीचर्स ही नहीं है। पीरियड आधार पर सेवानिवृत लोगों को आमंत्रित कर सैद्धांतिक विषय पढ़वा लिए जाते है। प्रयोशाला कार्य के लिए बहुधा तकनीशियन न होने से लेबोरेटरी कौन तैयार करे? प्राइवेट विश्वविद्यालयों की स्तिथि बदतर है, प्रैक्टिकल के नाम पर कुछ नहीं। आशय यह है कि जहां पुस्तकालय और प्रयोगशालाओं की एक तो उचित उपलब्धता नहीं है और जहां है वहां भरपूर उपयोग में नहीं लिए जाते। ऐसे संसथान क्या यूनिवर्सिटी कहलाने लायक हैं ? इससे छात्रों में कूप मण्डूकता प्रवृति पनप जाती है और वे कहीं पर भी वांछित व गुणवत्ता पूर्ण सेवा नहीं दे पाते।

ऐसी उद्देश्यहीन शिक्षा लेने से क्या तात्पर्य, और भविष्य में उससे क्या हासिल होगा? साझेदारी पढ़ाई पद्धति से छात्र सदैव सजग रहता है और उसकी सीखने की प्रवृति भी अन्य की अपेक्षा अधिक होती है। मैंने अपनी शिक्षा के दौरान अनुभव किया कि अध्यापकों में कतिपय ही छात्रों को लेक्चर के दौरान बोलने के लिए प्रोत्साहित करते थे। अधिस्नातक की पढ़ाई के समय वर्ष ने दो बार किसी वांछित विषय पर सेमिनार देनी पड़ती थी। पूरा शीर्षक लाइब्रेरी में जाकर तैयार करना होता और उसके सभी रिफरेन्स नोट करने पड़ते जिन्हे सेमीनार के टॉपिक को साइक्लोस्टाइल करा अंत में उन्हें भी लिखना पड़ता। सेमीनार के दिन प्रीवियस फाइनल के सभी छात्र, विभाग के सभी अध्यापक, रिसर्च स्कॉलर्स उस सेमीनार में उपस्थित होते। छात्र को पहली बार एक समूह के समक्ष बोलना घबड़ाहट पैदा करता, इस डर को ही मिटाने के लिए सेमीनार का एक उद्देश्य होता। अपना विषय प्रस्तुत करने के उपरांत फिर सेमीनार में उपस्थित सदस्यों के प्रश्नों का जवाब भी देना पड़ता। सेमीनार का मूल्यांकन भी तीन अध्यापक करते जिनमे एक विभागाध्यक्ष होता। क्या विश्व स्तर के महाविद्यालयों और विश्व विद्यालयों में ऐसे शिक्षा वांछित नहीं है? अवश्य है।

डॉ. (प्रो.) वीर बहादुर सिंह

भारत के लगभग सभी विश्व विद्यालयों में पाठ्यक्रम निश्चित होता है और उसके भी भाग कर कई सेगमेंट में बांट दिया जाता है। प्रश्न पत्र निर्माता जो अधिकांशत: किसी अन्य संस्थान से होते है उन्हें आवश्यक रूप से प्रत्येक खंड से प्रश्न चुनना पड़ता है। विदेशी विश्वविद्यालओं में पाठ्यक्रम बहुत सूक्ष्म दिया जाता है, इसलिए वहां पढ़ने के लिए अध्यापक को एक वृहत क्षेत्र मिलता है। वह पाठ्यक्रम से बाहर की विषय वस्तु भी पढ़ा देता है यदि उसके विचार से वह छात्र को जानना आवश्यक हो, ऐसी स्वतंत्रता भारत के महाविद्यालय/विश्वविद्यालयों में अभी तक नहीं पनपी।

अधिस्नातक अथवा स्नातक शिक्षा के अध्यापकों को निरंतर अपनी पढ़ने की विषय सामग्री सतत नए ज्ञान से पुष्ट करनी पड़ती है। भारत में एक बार विषय के नोट्स बना लिए फिर वर्षों तक उनमे कोई परिवर्तन नहीं होता। एक घटना पाठकों को बताने की इच्छा हो रही है.... डेरी के एक टीचर अपने महाविद्यालय में डेरी विषय पढ़ाया करते थे उनके नोट्स काफी पुराने थे, कागज़ भी उनका मटमैला और ब्रिटल हो गया था। एक छात्र ने उनसे एक दिन कहा– 'गुरू जी आपके नोट्स बहुत पुराने हो गए हैं, नए बना लीजिए। गुरु जी का उत्तर सुनकर छात्र स्तब्ध रह गया उन्होंने कहा कि– 'दूध का रंग पहले भी सफ़ेद था और आज भी वैसा ही है, फिर डेरी के नोट्स पुराने कैसे?' यह है हमारे देश की स्नातक शिक्षा का स्तर। टीचर का उत्तर अपेक्षित नहीं था क्योंकि विज्ञान और तकनीकी ज्ञान में वृद्धि से प्रत्येक विषय के पाठ्यक्रम में नित नयी वृद्धि हो रही है।

अब बात करते हैं शिक्षा प्रदाता अध्यापकों की या कहें विषय विशेषज्ञों की इस पक्ष पर सिवाय निराशाजनक स्तिथि के और कुछ भी नहीं लिखने को। अधिकांश विश्वविद्यालयों में विषय वार अध्यापकों की संख्या नहीं है, उस पर विषय विशेषज्ञों तो हैं ही नहीं। एक ही अध्यापक एक से तीन विषय तक पढ़ाता है, क्या कोई किसी मुख्य विषय के तीन आयामों में पढ़ाने के लिए पारंगत हो सकता है? नहीं, लेकिन ऐसा ही हो रहा है। प्राइवेट विश्वविद्यालयों में और राजकीय विश्वविद्यालयों में इस बावत कोई विशेष अंतर नहीं है।

भारत में राजकीय और प्राइवेट दोनों विश्वविद्यालयों के स्टैण्डर्ड मूल्यांकन के लिए भारत सरकार के स्तर पर एक्रीडिटेशन समितियां हैं लेकिन ऐसा लगता है कि इन समितिओं के सदस्य भी अपना कार्य निष्पक्षता और कुशलता से नहीं करते जिससे उच्चतम शिक्षा के स्तर में निरन्तर गिरावट के लिए वे भी कुछ सीमा तक जिम्मेदार हैं।

परीक्षा और मूल्यांकन की व्यवस्था भी बड़ी लचर और दोषपूर्ण है। प्रश्न पत्र निर्माता और उत्तर पुस्तिकाए जांचने वाले भी सही ढंग से नहीं चुने जाते, फलस्वरूप प्रश्न पत्र निर्माण असंतुलित और आंकलन फौरी तौर पर कर दिया जाता है। ऐसे में बहुधा शिक्षार्थी को न्याय नहीं मिल पाता, मंथली टेस्ट का प्रोविशन कतिपय महाविद्यालय ही करते हैं क्योंकि यह मेहनत का काम है जिससे सब बचना चाहते हैं।

विश्वविद्यालय की स्थापना वोट बैंक को ध्यान में रख कर की जाती है आवश्यकता देखकर नहीं। जगह-जगह नित नए विश्वविद्यालय खोले जा रहे हैं। राजस्थान में दूसरे कृषि विश्वविद्यालय की भौगोलिक आवश्यकता होते हुए भी उदयपुर में स्थापित करने पर सरकार ने खूब कलाबाजियां की तदुपरांत जोधपुर, जोबनेर और कोटा में कृषि विश्वविद्यालय खोलने में कोई प्रक्रिया नहीं अपनाई गयी। समझ नहीं आता कि इन अनावश्यक संस्थानों के लिए धन क्यों व्यय किया जाता है? भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्, यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन, ए.आई.सी.टी. आदि केंद्रीय संस्थान ऐसी स्थापनाओं को सुद्रण करने वास्ते धन क्यों मुहैया कराते? अच्छा होता इनकी जगह एक केंद्रीय कृषि विश्व विद्यालय केंद्र सरकार स्थापित करती। राज्य ऐसा करके अपना स्थापना व्यय बढ़ा लेते है और फिर बजट की कमी का रोना शुरू कर देती हैं। और जिन्हे स्वंय स्थापित किया उनको जर्जर कर फिर अन्य कही और एक यूनिट चालू कर देगी। यह नाटक सदैव चलता रहता है, जिसके कारण उच्च शिक्षा का अधोपतन हुआ है।

देशी और विदेशी छात्रों का आदान-प्रदान भी आपस में नहीं होता, अध्यापकों को भी कभी विदेशी यूनिवर्सिटी में अनुभव अर्जित के लिए नहीं भेजा जाता.....फिर यह कैसे विश्वविद्यालय हैं? कोई बताये की इनका विश्व स्वरुप कहां है? विश्वविद्यालयी शिक्षा में भाषा एक और महत्वपूर्ण पक्ष है जिसे बहुधा सभी संस्थाएं बिसरा चुकी हैं या उस पर उनका ध्यान ही नहीं है वह है अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त अन्य विदेशी भाषाओं का साधारण ज्ञान, जैसे जर्मन, फ्रेंच, स्पेनिश। यहां यह भी बताना जरूरी है कि छात्र को भारतीय भाषाओं में हिंदी और संस्कृत का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है। प्राचीन काल में नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालयों से विदेशी काफी ज्ञान जो संस्कृत में था, अनुवाद कर ले गये। वर्तमान में कृषि संकाय में भाषा ज्ञान के बारे में स्तिथि नगण्य है। आखिर में मैं यह अनुशंसा करता हूँ कि ऐसे सभी संस्थानों के नाम से विश्व विद्यालय शब्द हटा कर इनको प्रदेशीय महाविद्यालय नाम दिया जाय, और कुलपति के स्थान पर मुख्य अधिकारी पदनाम रखा जाय वैसे भी बंगाल सरकार ने कुलपति नियुक्त करने का अधिकार राज्यपाल से छीन लिया है और राजस्थान सरकार भी ऐसा करने की योजना रखती है फिर देखना ये है कि कुलपति समक्ष अधिकारी कौन बनता है, मुख्य मंत्री, मंत्री, प्रमुख सचिव, अथवा विधायक? या फिर कोई और सरकार में से ही? यह मसला सिनेमा स्कॉपिक है फिल्म बड़ी है धैर्य रख कर देखते रहिये।

–डॉ. (प्रो.) वीर बहादुर सिंह,
पूर्व कुलपति व डेरी विज्ञ,
महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
उदयपुर

बहरोड़ में हाई वोल्टेज विद्युत खंभे के नीचे चल रहा गुरुकुल डिफेंस का अभ्यास केंद्र

बहरोड़/ नीमराना, (निसं)। बहरोड़ कस्बे में डिफेंस एकेडमियों के द्वारा किशोर व नौजवान बच्चों के जीवन से खिलवाड़ करते हुए डिफेंस एकेडमियों का असली रूप सामने आया है।

अलवर जिले के बहरोड़ कस्बे के नारनौल रोड पर डीएवी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी आदि के रजिस्ट्रेशन से गुरुकुल डिफेंस अकैडमी का 33000 केवी की हाई वोल्टेज विद्युत लाइन के लोहे के पोल के नीचे बच्चों को शारीरिक अभ्यास केंद्र बनाकर डिफेंस के बच्चों के जीवन के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। जिससे किसी भी समय कोई बड़ा हादसा हो सकता है। विद्युत विभाग तो कब कार्यवाही करेगा लेकिन डिफेंस से संबंधित संस्थाओं का रजिस्ट्रेशन देने वाले शैक्षिणक विभाग के द्वारा निर्देशित पालना नियमों की भी धज्जियां उड़ाई जा रही हैं जो प्रशासनिक ढर्रे का मजाक बनता दिखाई दे रहा है।

गुरुकुल डिफेंस अकैडमी में हाई वोल्टेज विद्युत लाइन के नीचे शारीरिक अभ्यास केंद्र बनाकर बच्चों के जीवन से खिलवाड़ किया जा रहा है।

कस्बे में संचालित अनगिनत डिफेंस एकेडमियों का मकसद मात्र मोटी रकम 7 हजार रुपए से 15 हजार रुपए मासिक वसूल करना रह गया है। जिसमें एक डिफेंस एकेडमी के द्वारा तो फिजिकल ग्राउंड में हाई वोल्टेज के तारों का जाल फैला हुआ है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि बच्चों के फिजिकल ग्राउंड के बीच में जहां बच्चे अभ्यास करते हैं वहां हाई वोल्टेज का लोहे का स्तंभ लगा हुआ है। देर सवेर कभी भी इन मासूम नौजवानों के साथ यदि किसी प्रकार की कोई अनहोनी घटना घट जाती है तो उसके लिए इन संस्थाओं के पास तथा विद्युत निगम, तहसीलदार, उपखंड अधिकारी व जिला का कलेक्टर आदि प्रशासनिक अधिकारियों के पास कोई जवाब होना मुश्किल ही नहीं कर्तव्य परायणता के दोषी भी होंगे। कुछ डिफेंस एकेडमी में तो बच्चों को अलमारियों की तरह से रैक बनाकर सोने पर मजबूर किया जा रहा है जो हकीकत में क्षेत्र की जनता के साथ तो अन्याय है। गरीब से लेकर अमीर तबके के माता-पिता को लूटने का कारोबार चलाया जा रहा है।

■ किशोर व नौजवान बच्चों के जीवन से खिलवाड़, हो सकता है बड़ा हादसा

मामले में बहरोड़ एक्सईएन विद्युत विभाग बहरोड़ के अधिकारी पीडी सैनी से बात की गई तो उन्होंने कहा कि यदि ऐसा है तो यह गलत किया जा रहा है उन्होंने ऐसा क्यों कर रखा है हमारी जानकारी से बाहर है। जिसके मामले में जेवीवीएनएल बहरोड़ के एईएन को सूचित करने पर कार्यवाही होगी जो मेरे द्वारा ही मानी जाएगी। वहीं बहरोड के विद्युत विभाग के अधिकारी एइएन से संपर्क करने की कोशिश की गई तो उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

पुष्कर में अव्यवस्थाओं के बीच हजारों श्रद्धालुओं ने पूर्णिमा के पावन अवसर पर डुबकी लगाई

पुष्कर, (निसं)। करोड़ों हिंदुओं की आस्था का केंद्र तीर्थ नगरी पुष्कर इन दिनों प्रशासनिक उदासीनता के दंश झेलने को मजबूर है । एक और जहां आए दिन सीवरेज का गंदा पानी सरोवर के पवित्र जल में मिल रहा है तो वही सरोवर पर सफाई व्यवस्था के मुकम्मल इंतजाम देखने से नहीं मिलते । ऐसे में पुष्कर की धार्मिक छवि धूमिल हो रही है । सरोवर के घाटों पर विचरण करते आवारा पशु । यह नजारा सोमवार को जेष्ठ पूर्णिमा के पावन पर्व पर तीर्थ नगरी पुष्कर में देखने को मिला । जिसको लेकर स्थानीय पुरोहितों और पुष्कर आए श्रद्धालुओं ने गहरी नाराजगी व्यक्त की है । तीर्थ पुरोहितों का कहना है कि पुष्कर सरोवर पर सफाई व्यवस्थाएं नहीं की जा रही है । साथ ही आवारा जानवर यात्रियों को चोट पहुंचा रहे हैं । ऐसे में लाखों रुपए का ठेका देकर सफाई व्यवस्था बनाए रखने मैं पालिका कर्मचारी और अधिकारी नाकाम साबित हो रहे हैं ।खरेखड़ी रोड पर ब्रह्मा मंदिर की ओर से गौ शाला बनने के बाद भी जानवर को वहां शिप्ट नही किया जा रहा है। ये जानवर सरोवर पर विचरण करते नजर आ रहे है। करोड़ो रूपये खर्च करने बावजूद इनके हालात ज़स के तस बने हुए है । बहरहाल इन तमाम अव्यवस्थाओं के बीच देश भर से आए हजारों श्रद्धालुओं ने जेष्ठ मास की पूर्णिमा पर सरोवर में स्नान कर पूजा अर्चना और दान पुण्य किया ।

पूर्णिमा के पावन अवसर पर श्रद्धालु यात्रियों के साथ आवारा जानवर भी घाटों पर विचरण कर रहे थे।

पूर्णिमा पर कल्याण धणी के दर्शनों को उमड़े श्रद्धालु

डिग्गी, (निसं)। पूर्णिमा के अवसर पर मंगलवार को तीर्थनगरी डिग्गीपुरी में दिनभर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ रही। आस पास के क्षेत्र सहित सम्पूर्ण प्रदेश से भक्त दर्शनों के लिए दिनभर कतार में लगे रहे। भारी संख्या में श्रद्धालुओं के आने से डिग्गी में मेले का सा नजारा रहा। गर्मी व उमस से परेशान होने के बावजूद श्रद्धालुओं का उत्साह देखते बनता। पूर्णिमा के दिन उमड़ी भीड़ के कारण पुलिस को भी अतिरिक्त व्यवस्था करनी पड़ी तथा डिग्गी थानाधिकारी सत्यनारायण चौधरी व एएसआई भवरंलाल व एसआई कैलाश चंद दिन भर डिग्गी में मुस्तैदी से डटे रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 15 जून, 2022

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, मूल नक्षत्र दिन 3:33 तक, शुक्ल योग रात्रि 1:14 तक, कौलव करण दिन 1:32 तक, चन्द्रमा धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-धनु, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-मीन, शुक्र-मेष, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग सूर्योदय से दिन 3:33 तक है। कुमार योग, ज्वालामुखी योग दिन 1:32 तक है। राजयोग दिन 3:33 से सूर्योदय तक है। आज आजाद संक्राति, सूर्य मिथुन राजश में प्रवेश दिन 12:04 पर होगा। पूण्य काल प्रात: 5:40 से सांय 6:28 तक है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:02 तक, शुभ 10:44 से 12:27 तक, चर 3:52 से 5:35 तक, लाभ 5:35 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:18

मेष

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी।

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियों से राहत मिलेगी। दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों का निपटारा हो सकता है। मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह

परिजनों के व्यवहार के कारण दु:ख हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

कन्या

परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा।

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक व्मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। महत्वपूर्ण व्मामलों में दुविधा बनी रहेगी।

धनु

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि होगी। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में भय बना रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय के नवीन स्त्रोत सामने आयेंगे। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।